ईश्वरीय नशा कम होने के कारण

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

कोई भी भाई या बहन जब ईश्वरीय ज्ञान लेता है, जो ज्ञान स्वयं भगवान ने दिया है। जब उसे निश्चय हो जाता है और उसे प्रभु मिलन की अनुभूति होने लगती है तो उसे सत्य मार्ग मिल जाता है। उसका नशा चढ़ जाता है। खुमारी हो जाती है वाह मेरा भाग्य! भगवान मिल गए। बाबा जो लक्ष्य मुरलियों में देता है, उसको बहुत दृढ़ता होती है मैं नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी अवश्य बनूंगा। मैं रोज़ आठ घंटे योग कराऊंगा। वाह मेरे तो भाग्य ही खुल गये। सतमार्ग मिल गया। मैं कितने अंधकार में भटक रहा था, मेरे जीवन का अंधकार हे प्रभु! तुमने आके हर लिया। उसके पैर ज़मीन पर नहीं रहते। उसकी खुशी आसमान छूती रहती है। सबको अनुभव है। पर धीरे-धीरे खुशी का, नशे का पारा डाउन होने लगता है।

आज हम कुछ कारणों को आपके सामने रखेंगे। जिसके कारण ये नशा और ये खुशी डाउन होती है। हमारी खुमारी कम होने लगती है। हालांकि भगवान से मिलन के अनेक अनुभव हो जाते हैं, शिव बाबा की मदद के भी बहुत सारे अनुभव होने लगते हैं। बाबा हमें बहुत प्यार करता है ये आभास भी बहुत अच्छी तरह होने लगता है। परंतु पहली बात तो ये कि हमारी धारणायें बहुत सूक्ष्म हैं। प्युअर बनना है। खुशी और नशे में तो प्युरिटी इज़ी लगती है। जैसे ही मनुष्य काम धंधे में बिजी होता है और खुशी और नशा कम होता है तो प्युरिटी भारी लगने लगती है। फिर खुशी और नशा और डाउन होने लगता है। फिर मनुष्य क्या गलती करता है, आलस के अधीन होने लगता है। सवेरे

दूसरों को देख उनकी कमज़ोरियों को फॉलो नहीं करना, उनकी कमज़ोरियों को देखकर वो कमज़ोरी मेरे अन्दर तो नहीं है, ये चेक कर लेना।

उठना, ये रोज़-रोज़ उठना तो बड़ा भारी काम है। कभी-कभी उठना होता है तो ठीक था। रोज़ सवेरे-सवेरे तैयार होके मुरली सुनने जाना। रात देर से सोये थे, आज मेहमान आ गये थे। बड़ा भारी काम है। अच्छा हमने ये मार्ग अपना लिया, हमारा तो सुख भरा जीवन ढीला पड़ गया। मनुष्य ये सोचता है तो ढीला हो जाता है। ढीला होने से ईश्वरीय मदद कम हो जाती है। जो जीवन में एक उमंग-उत्साह रहना चाहिए वो भी फीका पड़ने लगता है। एक ये बड़ा कारण होता है आलस और अलबेलापन। फिर संगठन में रहते हैं। दूसरों को देखा कि वो तो भोजन खाते हुए बातचीत कर रहे हैं तो सोचते हैं हमने तो सुना था कि योगयुक्त होकर भोजन खाना चाहिए। हम तो बहुत साइलेन्स में, योगयुक्त होकर भोजन करते थे। ये तो सभी लोग ऐसे ही कर रहे हैं तो ढिलाई आने लगी। दूसरों को देखने से बहुत ढिलाई आती है। अरे योग में उन्हें पता चलता है कि फलाना भी नहीं आता, फलानी भी नहीं उठती तो हमें क्या पड़ी है, जो भाग्य में मिलेगा वो ले लेंगे ना। और ढीले हो जाते हैं।

दूसरा बड़ा कारण है, दूसरों को देखना, उनकी कॉपी करना। बाबा ने बहुत हँसाया था एक बार। चार भाई एक कमरे में सोये हुए हैं, एक की आँख खुलती है सवेरे 3:30 बजे। वो रजाई से बाहर मुँह निकाल कर देखता है कि बाकी तीन तो सोये हुए हैं तो वो भी सो जाता है। हँसाया था बाबा ने बहुत। तो ये दूसरों को कॉपी करना इससे गिरावट बहुत आती है। कुछ लोग ऐसे होते हैं उनकी आँख खुली उन्होंने देखा कि बाकी सब सोये हुए हैं तो वो जागृत हो जाता है कि अच्छा ये अपना भाग्य गंवा रहे हैं मैं इनसे ज़्यादा भाग्य, श्रेष्ठ भाग्य बनाऊंगा। और वो उठकर तीव्र पुरुषार्थ करने लगता है। ये रियल बात, दूसरों को देख उनकी कमज़ोरियों को फॉलो नहीं करना, उनकी कमज़ोरियों को देखकर वो कमज़ोरी मेरे अन्दर तो नहीं है ये चेक कर लेना और उसको चेंज कर देना। ये आवश्यक होता है।

-क्रमशः

फतेहगढ़-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक शुशील कुमार शाक्य एवं जेल अधीक्षक भीम सेन को तिलक करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन दीदी तथा ब्रह्माकुमारी बहन।

कूचबिहार-प.बंगाल। चिलकिर हाट(सन्यासी घाट) में ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला के उद्घाटन कार्यक्रम में गांव के मुखिया डॉ. पर्वत जी, पचायत जी, बैंक सहायक प्रबंधक उज्जवल जी, पूर्व एएचएम बानी जी, ब्र.कु. डॉ. स्वपन तथा स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सम्पा बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

बांसवाड़ा-राज.। डॉ. नीरज के पवन संभागीय आयुक्त को राखी बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज बहन।

आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के नशा मुक्त भारत अभियान के तहत आबू रोड स्थित छोटी मस्जिद के सामने चौराहे पर लगभग 500 मुस्लिम भाइयों को मस्जिद मौलवी की उपस्थिति में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति ब्र.कु. राजीव भाई ने जागरुक किया।

ब्रह्मपुर-गिरि रोड(ओडिशा)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ब्रह्मपुर में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी। साथ हैं केन्द्रीय विद्यालय के अध्यक्ष शिव प्रिय दास तथा अन्य।

राजेश कॉलोनी-जगाधरी(हरियाणा)। हिमांशु गर्ग,सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस,जगाधरी यमुनानगर को मुलाकात के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजू बहन।

अव्यक्त मुरली 04-02-2001 (पहेली-08)2024 -25

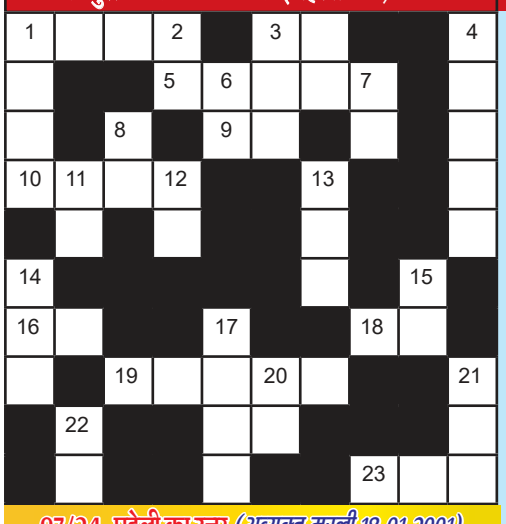

07/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 18-01-2001)

ऊपर से नीचे: 1. अति, 3. वाह, 6. रिटर्न, 8. उत्साह, 9. वायुमण्डल, 10. प्रेम, 12. सौदा, 14. फिरते, 16. रव, 17. नारियल, 18. कीर्तन, 20. माला, 21. धारणा।

बायें से दायें: 1. अधिकारी, 2. सेवाकेन्द्र, 4. केन्द्र, 5. तिलक, 7. गंगा, 8. उड़ते, 9. वायु, 11. टर्न, 13. महफिल, 15. मर्यादा, 16. रत्नों, 17. नाव, 19. जमा, 22. भय, 23. नम्बर, 24. लव।

ऊपर से नीचे

1. वैसे तो समर्पण तो हैं ही। लेकिन समर्पण का पक्का स्टैम्प लगना है। यह आलमाइटी गवर्मेन्ट का स्टैम्प मिट नहीं सकेगा। पक्का है ना! जो समझते हैं बहुत पक्का? महाराष्ट्र है। कोई ..... तो दिखायेगा ना! (4)
2. लाइन, वायरिंग, केबल (2)
3. नैन, नयन, आँखें, नेत्र (3)
4. तो है विश्व कल्याणी, विश्व परिवर्तक आत्मायें सर्व साधन ..... हैं? (5)
6. ऑर्डर करें मनमनाभव और ..... जाये नेगेटिव और वेस्ट थाट्स में, क्या यह लव और लॉ रहा? (2)
7. जिन्होंने सेवा की तो सेवा का मेवा खुशी भी मिली और ..... का खाता भी ..... हुआ। (2)
8. बाप कहते हैं, बच्चे बाप से भी होशियार हैं। क्यों? भगवान को बाँध लिया है। ..... है ना! (2)
11. पानी, नीर (2)
12. आपका राज्य लॉ और ऑर्डर के बजाए लव और लॉ में यथार्थ ..... से चल रहा है? (2)
13. पहले भी सुनाया कि अभी तक जो जो जहाँ तक सेवा के ..... हैं, बहुत अच्छी की है और करेंगे भी लेकिन अभी समय प्रमाण तीव्रगति और बेहद सेवा की आवश्यकता है। (3)
14. समय प्रमाण ..... अधिकारी बन सर्व रूहानी साधन तीव्रगति से कार्य में लगाओ। (5)
15. स्मृति स्वरूप रहे कि मैं मालिक इन साथियों से, सहयोगियों से कार्य करा रहा हूँ। स्वरूप में ..... रहे तो स्वतः ही यह सब कर्मेन्द्रियाँ आपके आगे जी हाजिर, जी हजूर स्वतः ही करेंगी। (2)
17. शक्तिशाली, बलशाली, शक्तिमान।(2)
20. शरीर, देह, काया। (2)
21. स्नेह का चुम्बक, यह ..... सब समय के लिए तैयार हैं?
22. धरा, धरती, भू (2)

बायें से दायें

1. आर्डर करें ..... स्वरूप बनना है और समस्या अनुसार, परिस्थिति अनुसार क्रोध का महारूप नहीं लेकिन सूक्ष्म रूप में भी आवेश वा चिड़चिड़ापन आ रहा है, क्या यह ऑर्डर है? ऑर्डर में हुआ ? (4)
3. समय की पुकार अब तीव्रगति और बेहद की है। छोटी सी रिहर्सल देखी, सुनी। एक ही साथ बेहद का ..... देखा ना! (2)
5. दादी जानकी कह रही हैं चलाने वाला बहुत ..... है।(5)
9. आदमी, पुरूष, मर्द। (2)
10. आज बापदादा हर एक स्वराज्य अधिकारी, पवित्रता की लाइट के ....., अधिकार की स्मृति के तिलकधारी, अपने- अपने भृकुटि के अकाल तख्तनशीन दिखाई दे रहे हैं। (4)
16. कोई दिल में बात समाई हुई होती है जिससे भय होता है। साफ दिल, सच्ची दिल तो साहेब ..... और सर्व भी .....। (2)
18. रात, रजनी। (2)
19. अभी राज्य अधिकार, ... में बैठे रहो, नीचे ऊपर नहीं आओ फिर देखो गवर्मेन्ट को भी साक्षात्कार होगा- यही है, यही है, यही है!(5)
23. जैसे स्थूल साधनों के लिए बताते हैं कि भूकम्प आवे तो यह करना, ... आवे तो यह करना, वैसे आप श्रेष्ठ आत्माओं के पास जो साधन हैं- सर्व शक्तियाँ, योग का बल, यह सब साधन समय के लिए तैयार हैं? (3)